गुड़िया मुन्ना और भूकंप से बचना सीखो

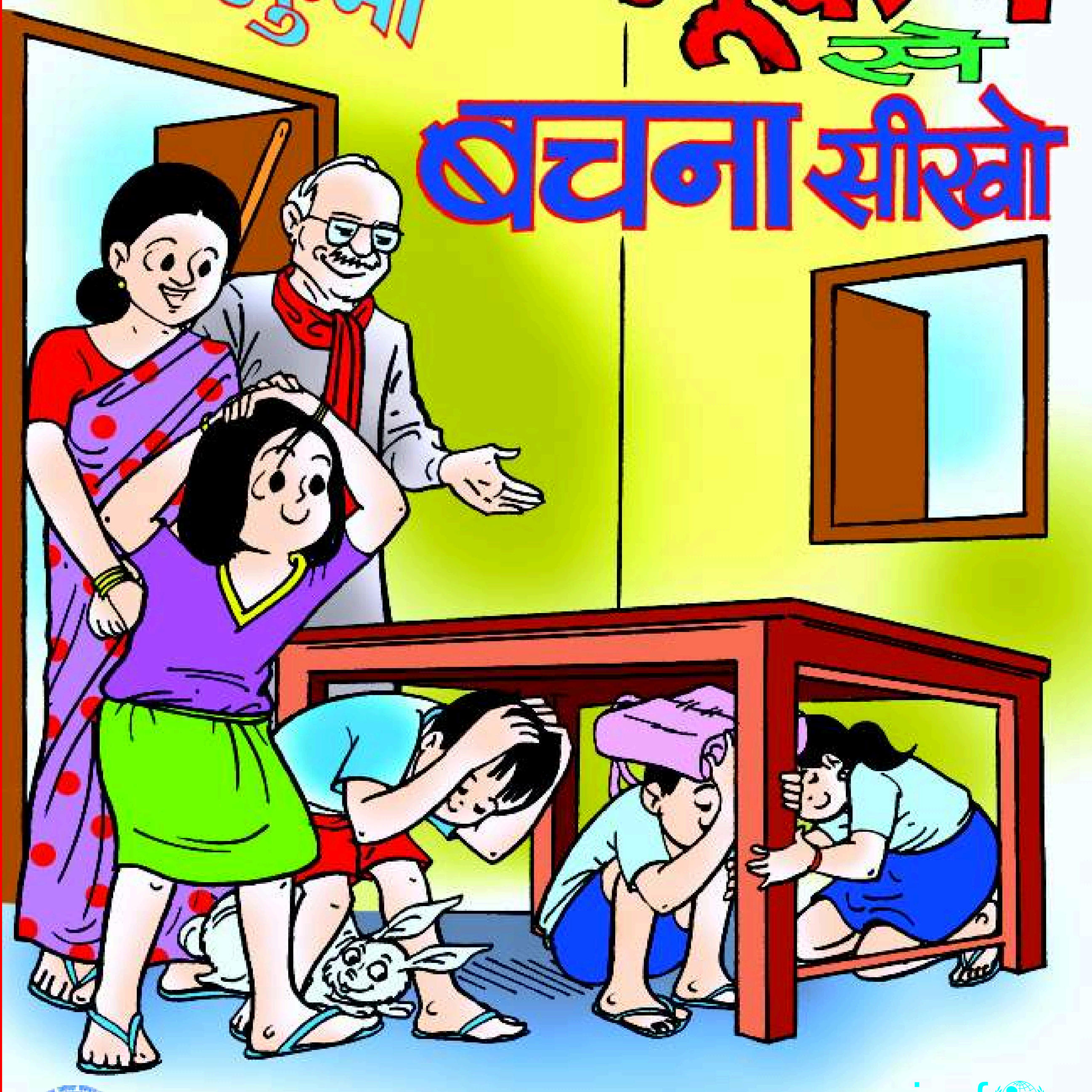

unicef
unite for children

गुड़िया और मुन्ना का परिवार एवं समाज
मैं हूं गुड़िया और ये मुन्ना! हम भाई-बहन और दोस्त भी हैं!
हमारे माता-पिता, सोहन लाल और सविता देवी! हमारे संरक्षक!
हमारी टीचर दीदी... हमारी सच्ची मार्गदर्शक!
हम सबके दादा जी! गांव के सबसे बुजुर्ग व्यक्ति!
हमारा दोस्त... मुनमुन खरगोश! होशियार चतुर और सदा मददगार!
तो अब शुरु करें, भूकंप से बचाव की तैयारी की कहानी...

18 सितंबर की शाम का समय था। गुड़िया होमवर्क बनाने में लगी थी और मुन्ना बाहर खेल रहा था।
अरे! यह हमारी गाय इतना शोर क्यों मचा रही है?
तभी अचानक धरती हिली, पर गुड़िया को यह बात पता न चली
ओऽह! मेरी कॉपियां क्यों हिलने लगीं...? और चारपाई भी हिल रही है!
घबराकर गुड़िया फौरन चारपाई से उतर गई।
ओऽह! घर भी हिल रहा है!

गुड़िया घबराकर चीख पड़ी-
मांSSS
इस बीच गुड़िया की मां रसोई में बच्चों के लिए ग्लास में दूध डाल रही थी। दूध से भरे ग्लास एकदम से गिर गए...
और बर्तन भी लुढ़कने लगे।
दरवाजा और खिड़की को हिलते-डुलते देख मां जोर से चीख उठीं-
गुड़ियाऽ! भागोऽ!
भूकंप!ऽऽ

गुड़िया का हाथ पकड़कर उसकी मां सविता देवी घर से बाहर की ओर बड़ी तेजी से भागी आईं–
ओह! बच गए! भूकंप था!
साथ में गुड़िया और मुन्ना का प्यारा दोस्त मुनमुन खरगोश भी बाहर भागा आया।
ओह! मुनमुन!
तभी मां की निगाह मुन्ना पर पड़ी। मुन्ना बाहर खेल रहा था। वह मां और गुड़िया को इस तरह घबराया देख, उनके पास भागा आया।
मां! क्या हुआ मां?!
तूने महसूस किया...? भूकंप आया था बेटा!

क्याऽऽ?! भूकंपऽऽ!?
तो क्या यह भूकंप था?... तभी मेरे हाथ से गेंद छूट गई थी!
और हम कई बच्चे अचानक 'धम्म' से गिर पड़े थे!
और चिड़िया जोर-जोर से चहचहाने लगी थीं!
हां, मम्मी ने बताया कि यह भूकंप था मुन्ना! हमने भूकंप के बारे में पढ़ा था और आज महसूस भी कर लिया!
ओ-ह! कैसा अजीब लग रहा था.. हमें तो पता ही नहीं चला!

इस बीच इलाके के सारे लोग घर के बाहर आ गए थे। सबके चेहरे पर घबराहट थी। साथ ही जान-माल बचने का संतोष भी था।
बाप रे! बच गए!
मैं तो बच्चों के लिए घबराई हुई थी...
दादा जी मुझे और मैं दादा जी को लेकर भागी!
हां!
तभी गुड़िया और मुन्ना के पिता सोहन लाल वहां साइकिल से आ पहुंचे। वह काम से शहर गए हुए थे। उन्होंने पत्नी और बच्चों को सही-सलामत पाया, तो चैन की सांस ली।
!
फिर उन्होंने अपने घर को सही-सलामत पाया तो बच्चों को हिदायत देने लगे-
अभी घर के भीतर नहीं जाना। भूकंप का खतरा बना रहता है। और न ही घर की दीवारों से सट कर खड़े रहना।
जी, पिता जी!

मुन्ना घर के समीप पेड़ के नीचे चबूतरे पर बैठ गया।
वहां भी नहीं बैठो। भूकंप आया, तो पेड़ तुम्हीं पर गिर जाएगा!
हां, सही बताई। पर हम बाहर खाली बैठ कर क्या करें गुड़िया?!
मुन्ना! क्यों न हम टीचर दीदी के पास चलें।
और फिर हम घर के भीतर तो जा नहीं सकते। टीचर दीदी भी बाहर ही होंगी। हम भूकंप के बारे में उनसे अपना ज्ञान बढ़ाएंगे।
तब तो ठीक है! समय भी कट जाएगा।

बच्चों को जाते देखा, तो सोहन लाल खुश होकर अपनी पत्नी से बोले-
जाओ-जाओ! टीचर जी का दिया ज्ञान हमें भी बताना।
हां जी, पढ़ाई-लिखाई का यही तो फायदा है। पड़ोस की फूली की मां अभी भी भूकंप को भूत मानती हैं। कहती हैं, यह सब हिलाना-डुलाना भूतों का काम है।
सुनकर सोहन लाल हंस पड़े-
यह तो गजब का अंधविश्वास है मुन्ना की मां।
मगर जानने के लिए अभी बहुत बाकी है। बच्चों से हमें भी सीखना चाहिए। केवल बच्चों के जानने-सीखने से काम नहीं चलेगा।
इस बीच गुड़िया, मुन्ना, नंदू, रानी और जावेद टीचर दीदी के पास पहुंच गए थे।
अरे बच्चो! तुम सब?.. क्या तुमने भूकंप महसूस किया?!

हां टीचर दीदी, बड़ा भयानक था!
मैं तो समझ ही नहीं पाया कि भूकंप है!
ओ-हो-हो-होऽऽ... मुझे तो बड़ा मजा आया!
टीचर दीदी भी नंदू की बातों पर हंस पड़ीं-
क्या, मजा आया?! हो-हो-होऽ
1988 के भूकंप में मगर मैं बहुत डर गई थी। घर के भीतर जाती ही नहीं थी।
वैसे मजा आने की बात नहीं है नंदू, मगर बहुत ज्यादा घबराने की बात भी नहीं है। बस, समझदारी और सावधानी की जरूरत है!

जैसे बेंच, चौकी, पलंग और टेबुल के नीचे घुस जाओ।
दीवार से सटकर खड़े न हो! सिर को बचाओ!
बिजली का मेन स्विच ऑफ कर दो।
अरे वाह! तुम सब तो पहले से बहुत जानते हो। फिर मेरे पास क्यों आए हो भूकंप के ज्ञानियो!?
टीचर दीदी, जो पहले से हम जानते हैं, वह भी तो हमें आपने ही बताया है!
भूकंप के बारे में और बहुत सारी बातें बताइए, जो हम नहीं जानते।
तो ठीक है, सबसे पहले तुम्हें बताती हूं, 1988 में आए भूकंप के बारे में। आज का भूकंप तो उतना खतरनाक नहीं था, पर 1988 वाले भूकंप के बारे में बताते हुए तो मेरे हाथ-पैर कांपने लगेंगे।

टीचर दीदी ने दुखी मन से 1988 के भयावह भूकंप के बारे में बताना शुरू किया-
बच्चो! 1988 का भूकंप 21 अगस्त को आया था। हम सबकी जान एकदम अटक गई थी। रिक्टर पैमाने पर उसकी तीव्रता 6.6 मापी गई थी।
बच्चे ध्यान से सुनने लगे –
बिहार में दरभंगा और मधुबनी बुरी तरह ध्वस्त हो गए थे। रांची और पलामू भी प्रभावित क्षेत्रों में थे। लगभग 50 हजार घर तबाह हो गए थे।
1988 के भूकंप की बातें सुनकर बच्चे सिहर गए-
मगर डरना नहीं है बच्चो, बल्कि उस समय साहस, समझदारी और दूसरों को सहयोग करने की भावना होनी चाहिए।
जी, टीचर दीदी। हमें आप यह बताइए कि भूकंप के दौरान हम अपनी और दूसरों की जान कैसे बचाएं!?

हां, यह अच्छी बात है। भूकंप के दौरान हमें कौन-कौन सी सावधानी बरतनी चाहिए, यह सभी को जानना जरूरी है।
सबसे पहले तो हमें भूकंप के दौरान संभव हो, तो तुरंत घर से बाहर निकल जाना चाहिए।
जी, जैसे मैं घर से फौरन भाग आई थी।
और मैं भी।
हम भी!
वेरी गुड!
और यदि भागने का मौका नहीं मिले तो भूकंप के दौरान कमरे में लकड़ी के फर्नीचर, कमरे के दो दीवारों के कोने में या फिर दरवाजे के पास खड़े होकर अपना सिर और जीवन को बचाना चाहिए।
दीदी, कभी-कभी तो भूकंप के दौरान दीवार पर टंगी चीजें भी हम पर गिर जाती हैं।

गुड़िया! तुमने सही बात कही। दीवारों पर टांगी जाने वाली चीजें अच्छी तरह से पेंच से कस कर टांगनी चाहिए।
जी, ताकि भूकंप के झटके से वह गिरें नहीं। हुक से टंगी चीजें गिर सकती हैं।
दीदी, भूकंप के दौरान भागना हो, तो कहां भागें? हर जगह तो मैदान, खेत या खाली जगह होती नहीं है।
हां, यह तो जरूरी है कि सुरक्षित स्थानों की पहचान पहले कर लेनी चाहिए, ताकि भूकंप के दौरान जीवन बचाने में सहूलियत हो।
आज जब भूकंप आया था, तो मेरी चारपाई के पास रखी हुई लकड़ी की अलमारी भी हिल रही थी... कहीं वह मुझ पर गिर जाती तो?!
!?!?

गुड़िया। उसके लिए एक उपाय है कि आलमीरा या ट्रॉली वाले सामानों को अंग्रेज़ी के 'एल' (L) अक्षर वाले कब्जे से जोड़कर रखना चाहिए, ताकि वह भूकंप के झटके से गिरे नहीं!
तो ठीक है! और बताती हूं.. भूकंप आने पर ऊंचे मकान या बड़े पेड़ के पास खड़ा नहीं होना चाहिए।
यह तो मैं भी जानती हूं। मुन्ना को पेड़ के नीचे बैठने से मैंने मना किया था।
हां गुड़िया! तभी तो तुम गुड़िया नहीं, गुड़िया रानी हो!
एक बात और जान लो। भूकंप आने पर शॉर्ट सर्किट से आग भी लग जाती है। ऐसे में घर में महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों को पहले ही सुरक्षित स्थान पर रख देना चाहिए।

केवल दस्तावेजों को ही नहीं, बल्कि ज्वलनशील पदार्थों को भी सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए।
किरासन
LPG
भूकंप के तुरंत बाद पालतू जानवरों के पास नहीं जाना चाहिए, क्योंकि उसके बाद जानवरों के व्यवहार में परिवर्तन हो जाता है। ऐसे में वह आक्रामक होकर काट भी सकते हैं।
मगर हमारा मुनमुन ऐसा नहीं है। यह आक्रामक नहीं हो सकता। यह तो हमारा प्यारा दोस्त जानवर है।
और यह काटने वाला जानवर नहीं है। है न मुनमुन !?
!

तो मिल गई जानकारी! या और कुछ जानना बाकी है!?
टीचर दीदी, आप एक बात बताना तो भूल ही गईं! भूकंप के दौरान बिजली का मेन स्विच ऑफ कर देना चाहिए।
मैं यह बताना भूली नहीं थी। मैं इसलिए नहीं बताई थी कि यह तुम जानती थी! है न गुड़िया... हो-हो-होऽऽ
दीदी की बातों पर सभी बच्चे हंस पड़े।
अब तुम सब एक काम करो। तुम सब मुखिया जी से मिलकर भूकंप से बचाव के लिए जन जागरूकता अभियान छेड़ो और आपदा मित्र बनकर काम करो।

आपदा मित्र क्या होता है दीदी?
आपदा मित्र एक स्वयं सेवी होता है, जो आपदा के समय सबकी मदद करता है। जब आपदा नहीं होता है, तब जन जागरूकता अभियान चला कर लोगों को आपदा के बारे में बताता है।
क्या हम आपदा मित्र बन सकते हैं!?
हां, क्यों नहीं! हम सभी लोग आपदा मित्र बन सकते हैं।
मगर, इसमें हमारी मदद कौन करेगा टीचर दीदी!?
मैं करूंगा तुम्हारी मदद!
पीछे से दादा जी आ पहुंचे थे। वह इलाके के सबसे वृद्ध व्यक्ति थे।

दादा जी, आप?
हां, मैंने तो 1934 का भी भूकंप देखा है। तब मैं दस साल का था.. तुम सबकी तरह छोटा। मुझे अच्छी तरह याद है वह जलजला। बड़ा भयानक प्रलय जैसा था।
दादा जी 1934 के भूकंप के बारे में बताते हुए यादों में खोते चले गए–
ऐसा था वह भूकंप...
इतनी तबाही मची थी कि पूछो मत...

चारों तरफ बरबादी, बरबादी और केवल बरबादी!
अब मैं बताता हूं कि वह भूकंप कितना खतरनाक था!
1934 का भूकंप 15 जनवरी को दिन में 2 बजकर 13 मिनट पर आया था। रिक्टर पैमाने पर उसकी तीव्रता 8·4 मापी गई थी।
बाप रे! 8·4!... तब तो सब खत्म हो गया होगा!
हां बच्चो, रिक्टर स्केल पर 1 अंक ज्यादा होने पर उसकी तीव्रता दोगुनी हो जाती है।
भूकंप का केंद्र नेपाल में था और बिहार की सीमा के समीप था। उत्तर बिहार और नेपाल बुरी तरह प्रभावित हुए थे। मुंगेर और मुजफ्फरपुर एकदम तबाह हो गए थे।

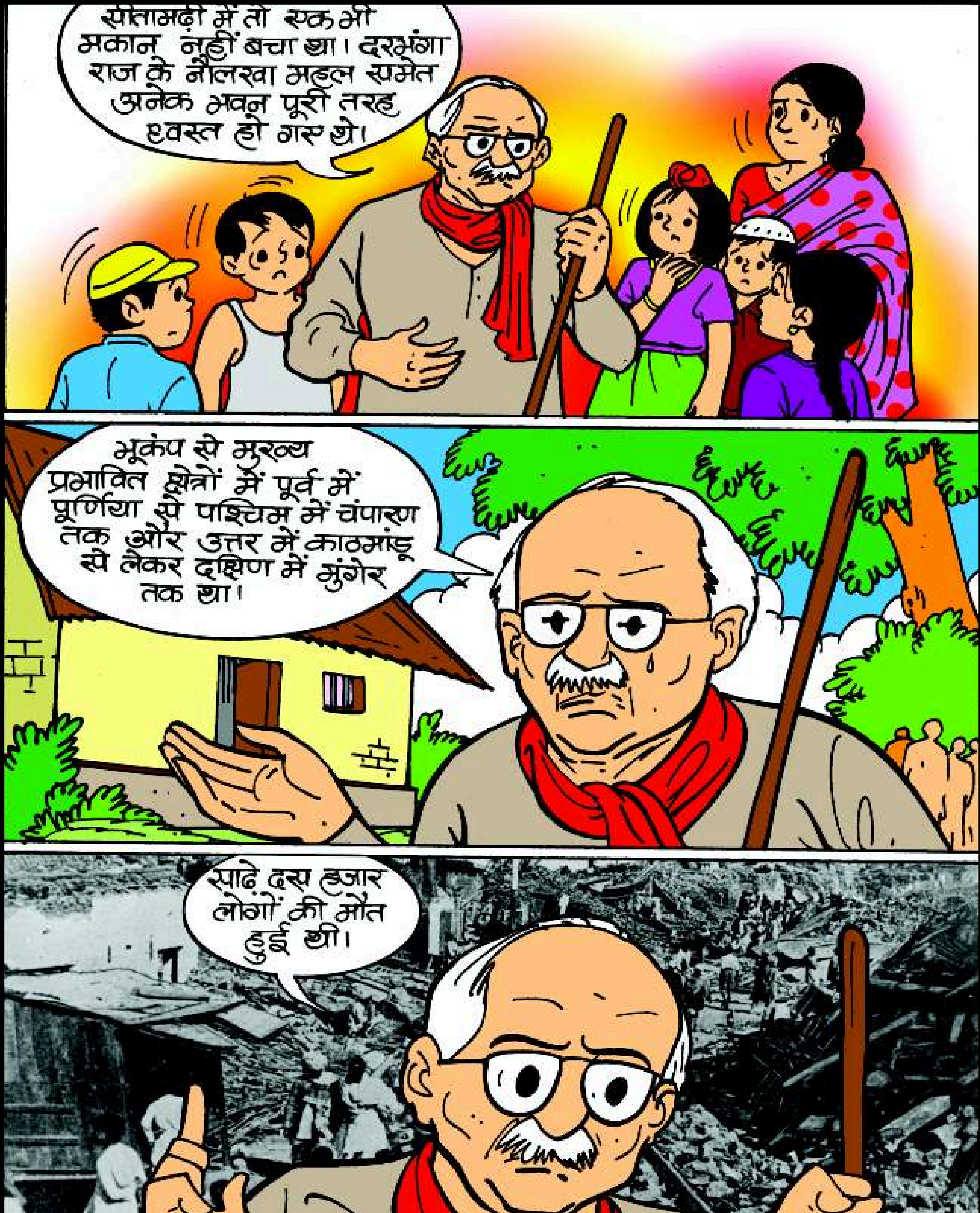
सीतामढ़ी में तो एक भी मकान नहीं बचा था। दरभंगा राज के नौलखा महल समेत अनेक भवन पूरी तरह ध्वस्त हो गए थे।
भूकंप से मुख्य प्रभावित क्षेत्रों में पूर्व में पूर्णिया से पश्चिम में चंपारण तक और उत्तर में काठमांडू से लेकर दक्षिण में मुंगेर तक था।
साढ़े दस हजार लोगों की मौत हुई थी।

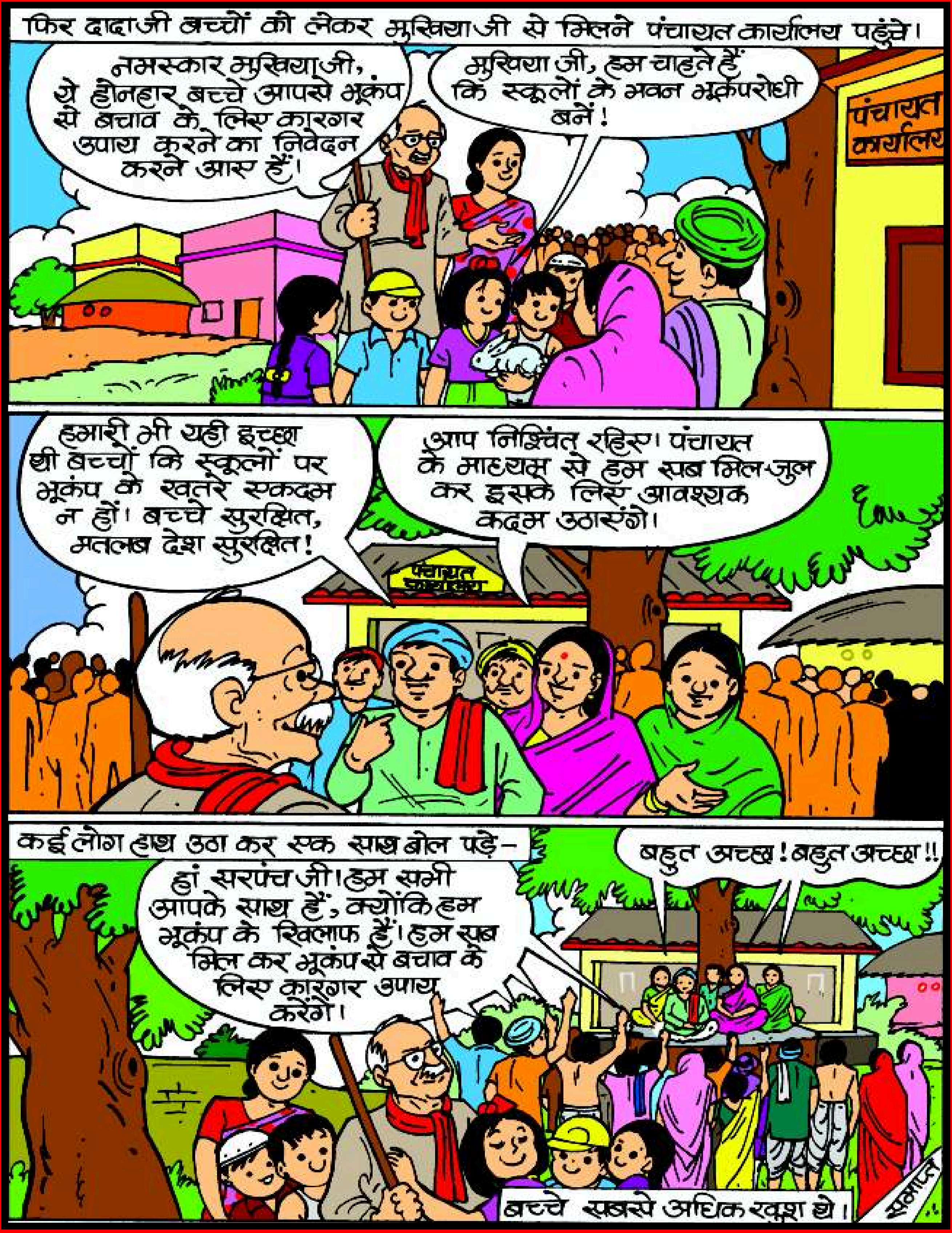
फिर दादाजी बच्चों को लेकर मुखियाजी से मिलने पंचायत कार्यालय पहुंचे।
नमस्कार मुखियाजी, ये होनहार बच्चे आपसे भूकंप से बचाव के लिए कारगर उपाय करने का निवेदन करने आए हैं।
मुखिया जी, हम चाहते हैं कि स्कूलों के भवन भूकंपरोधी बनें!
पंचायत
हमारी भी यही इच्छा थी बच्चों कि स्कूलों पर भूकंप के खतरे एकदम न हों। बच्चे सुरक्षित, मतलब देश सुरक्षित!
आप निश्चिंत रहिए। पंचायत के माध्यम से हम सब मिल-जुल कर इसके लिए आवश्यक कदम उठाएंगे।
कई लोग हाथ उठा कर एक साथ बोल पड़े–
हां सरपंच जी। हम सभी आपके साथ हैं, क्योंकि हम भूकंप के खिलाफ हैं। हम सब मिल कर भूकंप से बचाव के लिए कारगर उपाय करेंगे।
बहुत अच्छा! बहुत अच्छा!!
बच्चे सबसे अधिक खुश थे।
समाप्त

बिहार सरकार

unicef
unite for children

fcgkj jkT; vkink ic/ku ikf/kdj.k

f}rh; ry] iUr Hkou] cyh jkM] iVuk

website-www.bsdma.org Phone: 0612-2522032, 2522284, Fax: 0612-2532311